# राज की हस्तकला

→ राज को हस्तकला का खजाना कहा जाता है।

→ हस्तकला का प्रमुख केन्द्र → बाड़मेर जोधपुर

→ GI Tag :- 1 अगस्त 2023 को टैग मिला

→ पिछवाइयाँ → नाथद्वारा, बंधेज - जोधपुर, कोफ्तगिरी → उदयपुर

उस्ताकला → BKNR, करीदाकारी BKNR

इन पर Tag 2023 से 2031 तक मिलेगा

सबसे पहले कोटा डोरिया साड़ी 2006 में GI Tag मिला

मुस्लमान कारीगर को रंगरेज
हिन्दु कारीगर को छीम्पा कहा जाता है।

आ ज बाँ ब आये
अजरक बाजम कागरू सांगानेरी अकोला

कपड़े पर हाथ से छपाई
↳ बाड़मेर की खत्री जाति

प्रमुख प्रिन्ट :

→ अजरक प्रिन्ट : दोनों तरफ छापे रंग (नीला लाल) ज्यामितीय आकृति
↳ खत्री जाति → बालोतरा, बाड़मेर

→ मलीर प्रिन्ट → एक तरफ छापा → रंग → कत्थई काला
↳ बाड़मेर → (यालिन छीम्पा)

बगरू प्रिंट → जयपुर → रंग → लाल | काला

↳ प्राकृतिक रंगों का प्रयोग

↳ राम किशोर → प्रमुख कलाकार

→ आजम प्रिंट → आकोला चित्तौड़गढ़

↳ रंग – लाल | हरा

↳ मोटी दरी के कपड़े

→ सांगानेरी प्रिंट : जयपुर

↳ नाम देवी के छापे प्रसिद्ध है।

↳ मुन्ना लाल गोयल

# कपड़े पर रंगाई कला

बंधेज → रंग की बांधना
उल्लेख → बाण भट्ट ने हर्षचरित
कलाकार → बाघ सिंह भाटी | फूल सिंह भाटी
पद्म श्री → तैय्यब खाँ
टीपना → वस्त्रों पर अलंकरण
राजशाही → एक ही रंग में रंगा जाने वाला साफा।
धनक → छोटी- छोटी युक्त बुन्दे
मोठरा → दो रंगों में रंगा जाने वाला साफा
पंचरंगा → पांच रंगों में रंगा जाने वाला साफा

मोठड़ा → जोधपुर
लहरिया → जयपुर

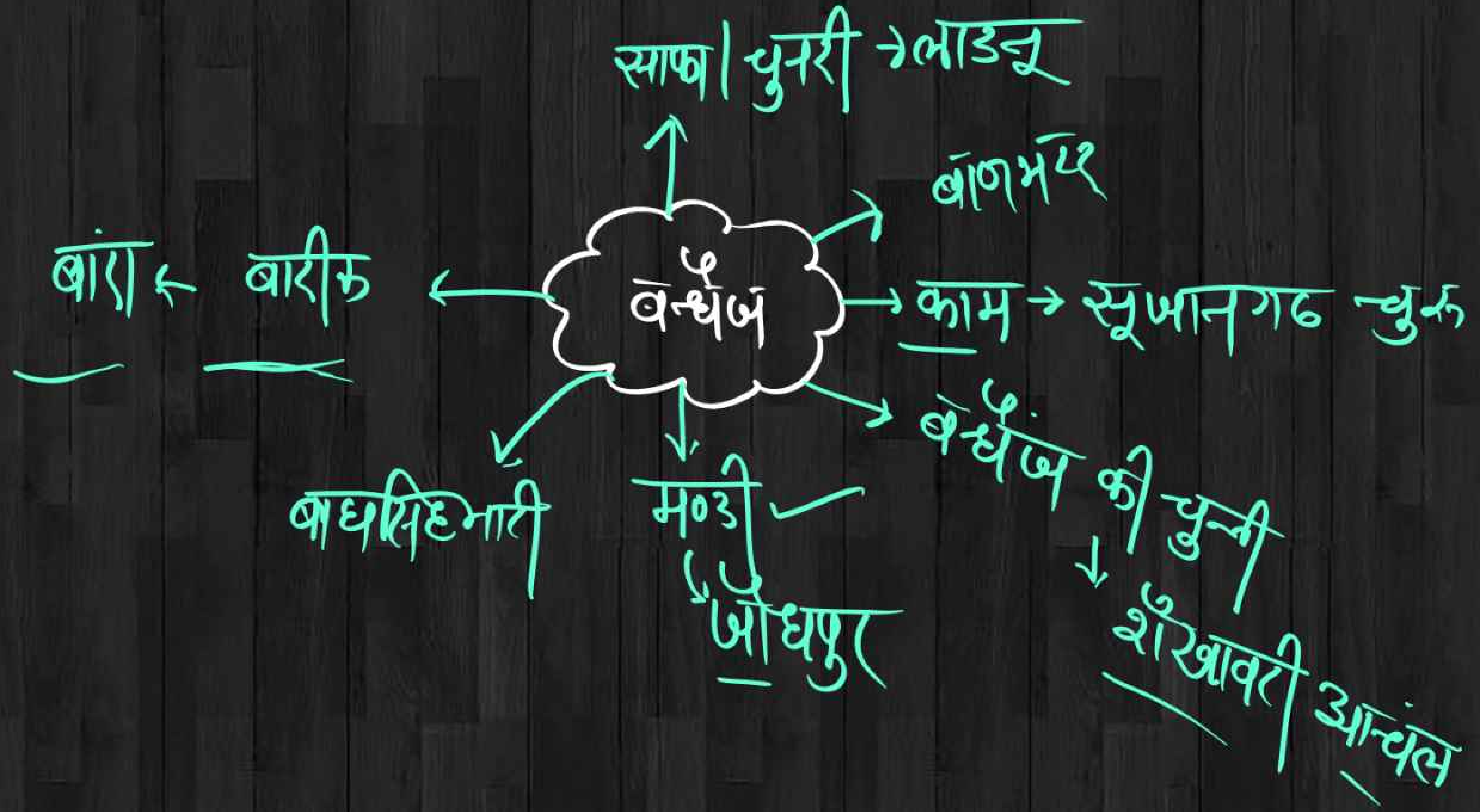

बंधेज
साफा | चुनरी → लाडनू
बाणभट्ट
काम → सुजानगढ – चुरू
बंधेज की चुन्नी
↓
शेखावटी आँचल
मण्डी
↓
जोधपुर
बाघसिंह भाटी
बांरा ← बारीक

शिकारगाह अलंकरण :→ बुन्दी
मोर युक्त साड़ीया → स० माधोपुर
पशु पक्षी अलंकरण → शेखावटी क्षेN
सूठ की साड़ीया → स० माधोपुर

→ पीला पोमचा → पुत्र जन्म पर
→ गुलाबी पोमचा → पुत्री के जन्म
→ चीड़ का पोमचा → विधवा महिला
→ पाटुदा का लूगड़ा → पोमचे का प्रकार → (शेखावटी आंचल)
→ लूगड़ा → आदिवासी महिलाओ का घाघरा

→ कोथला → पुत्रप्राप्ति के बाद पीहर वालो की तरफ से लड़के वालो को दी जाने वाली टोकरी

दाबू → जिस स्थान पर रंग नहीं भरना वहा लई या लूगदी रख दी जाती है।

- मोम का दाबू → स॰ माधोपुर
- मिट्टी का दाबू → बालोतरा - बाड़मेर
- गेंहू का दाब → जयपुर
- दाबू प्रिन्ट → चित्तौड़गढ़
  - आकोला

## कशीदाकारी या कढ़ाई कला

ज़री → धातु से बने चमकदार तारों से कपड़े पर कढ़ाई करना

Imp गोटा → कपड़े पर अलंकरण करना < खण्डेला → सीकर; भीनाय → अजमेर

ज़रदोजी → सुनहरे धागों से कढ़ाई करना

कलाबत्तु → सुनहरे तारों का प्रयोग करना

मुकेश → सुती या रेश्मी कपडे पर बादले से छोटी-2 बिन्दकी बनाना।

बादला → सोने-चान्दी के तारों को चपटा करके जरी पर काम करना।

गोटे के प्रकार :- लप्पा लप्पी → गोटे मे जब ताना सूत का हो और बाना बादले का हो। उसे लप्पा तथा जिसकी चौड़ाई कम होगी उसे लप्पी कहते है।

↳ गोखरू → गोटे को मोड़कर अलकंरण करना

↳ किरन → बादले की झालर को कहा जाता है → साड़ी के आंचल मे और घुंघट वाले हिस्से मे लगी होती है।

↳ बांकड़ी → बादले से बनी बेल स्त्रियो के दुपट्टो और पोशाको मे लगी होती है

↳ नक्सी :- खजूर की पत्तीया

→ बिजीया → गोटा पत्ती से बने फुल को बिजीया तथा बेल को चम्पाकली कहते है।

मिरर वर्क : कांच के छोटे-2 टुकड़े कपड़े पर रखकर रेशमी धागे से कढ़ाई करना

↳ सर्वाधिक काम → चौहटन बाड़मेर

↳ रमा देवी को राज्यस्तरीय पुरस्कार मिला

चटापटी वर्क : कपड़े के छोटे-2 टुकड़े काटकर दूसरे कपड़े पर लगा देना

पैचवर्क : किसी भी कपड़े पर मन चाहा डिजाइन डिजाइन कर उन्हे काट लेते है। दूसरे कपड़े के साथ तुरपाई कर दी जाती है।

मसुरिया साड़ी → प्रमुख केन्द्र → कैथून कोटा
↳ विभिषण मन्दिर

मसुरिया/मलमल की साड़ी → सूती धागों के साथ रेशमी धागों तथा जरी से बनी साड़ीया मसुरिया साड़ी कहलाती है
↳ 2007 में वसुंधराराजे सिंधीया को वुमेन टुगेदर अवार्ड से सम्मानित किया

जैनेब की साड़ीया → कसुआ कोटा
जरी " " → जैसलमेर
फूल पत्ती " → नाथद्वारा

## मीनाकारी कला : (हस्तकला की आत्मा)

↳ प्रमुख केन्द्र → सीतापुरा जयपुर

↳ सोने चान्दी के आभूषणों में कढाई करके उसमे रंग भरना

→ इस कला को आमेर शासक मिर्जाराजा मान सिंह लाया था

↳ इस कला के जाडगर → कुदरत सिंह, शौभासिंह, किशनसिंह

↳ पीतल पर मीनाकारी → जयपुर

→ ताबे " → भीलवाड़ा

→ चान्दी " → नाथद्वारा

→ सोने पर " → प्रतापगढ

कुन्दन कला : सोने चान्दी के आभूषणों में किमती पत्थरों को जड़ना
↳ सर्वाधिक कार्य → जयपुर

→ कोफ्तगिरी :(पंजाब से) फौलाद से बनी वस्तु में पीतल सोने के तार से जड़ाई करना

→ तहनिशा → किसी भी धातु को गहरा खोदकर उसमे तार से जड़ाई करना
↳ अलवर की तलवार जाति और उदयपुर की सिकलीगर जाति

→ मुरादाबादी : पीतल के बर्तनो पर नक्काशी करना → जयपुर
↳ यह कला भी जयपुर अलवर में प्रसिद्ध है।

तबक → चांदी के तार को हिरन की खाल में रखकर पीटना - तबक / वर्क
↳ कारीगर → पन्नीगर

तबाक → मुसलमानी बर्तन है।

सालका → मुसलमानी मदपात्र

मसक → राजपूतों या मुसलमानों के घर पानी भरने वाले को

बाजोट → भोजन / पूजा थाली के नीचे रखे जाने वाली चौकी

बील → घरों में छोटे मोटे सामान को रखने के लिए बनाया स्थान

चोपड़े → विवाह तथा मांगलिक अवसरों पर कुमकुम तथा चावल आदि रखने
के लिए लकड़ी का पात्र

पिछवाईया :→ मूर्ति के पीछे चित्र कपड़े पर
↳ सर्वाधिक पिछवाईया → नन्दीराम
↳ पिछवाइयाँ → नाथद्वारा, कोटा, काकरौली, अलवर

पाने → कागज पर देवी देवताओं के चित्र

मथेरणा कला → पौराणिक कथा पर देवी देवताओं के भित्ति चित्र

नाथद्वारा → अन्नकूट महोत्सव, डांग नृत्य, पिछवाईया, पाने, केले की सांझियां
इध की होली, गुलाबी गणगौर

माण्डणा →

काष्ठ कला → बस्सी चित्तौड़गढ़

↳ जन्मदाता → प्रभात जी सुथार ✓ (350 वर्ष)

↳ लकड़ी की गणगौर ✓

बेवाण → लकड़ी से निर्मित मन्दिर → जल झूलनी एकादशी

↳ मिनीएचर वुड टेम्पल ✓

↳ मांगीलाल सुथार ✓

कावड़ → लकड़ी से निर्मित मन्दिर → सारे दरवाजे खोलने पर राम -सीता के दर्शन

कठपुतली → उदयपुर चित्तौड़गढ़ - ये आडू की लकड़ी की बनती है

↳ प्रमुख कलाकार → देवीलाल सामर → लोक कला मण्डल की स्थापना की

मूर्ति कला → जयपुर

जिंक से निर्मित पानी की बोतल → बादला

टेरीकोटा कला → मिट्टी से निर्मित देवी देवताओं के मंदिर

✓ ↳ मोलेला गांव → राजसमन्द

मिट्टी के घोड़े → हरजी गांव जालोर ✓

गलीचे → टोंक | जयपुर ✓

दरियां → लवाण (दौसा) सालावास (जोधपुर)

कागजी बर्तन → अलवर ✓

खेल का सामान → हनुमानगढ़ ✓

संगमरमर की मूर्तियां → जयपुर ✓

जीरा → जालोर

ऊन के बने नमदे → टोंक ✓

खेस → BKNR | जालोर ✓

कशीदा जुतियां → भीनमाल ✓

कृषि औजार → गजसिंहपुर ✓

थेवा कला :- प्रतापगढ → सोनी परिवार

most

↳ 500 वर्ष पुरानी ✓

↳ सोने की 3 इंच चौड़ी व चार इन्च लम्बी स्वर्ण की पीट-2 कर विस्तार देना और उसमे हरे कांच पर रखकर चान्दी से अंकन करना → थेवा कला

नोट → अन्य कांच के रंगो पर कार्य करना → आला कला

→ थेवा कला इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका मे अंकित है

→ " प्रशिक्षण केन्द्र 2004 ✓

2002 मे 5 रूपये का डाक टिकट जारी

कलाकार → महेश सोनी, विजय सोनी, गीरिश कुमार सोनी नाथू जी सोनी, राम निवास सोनी

## उस्ताकला / मुनावती कला : बीकानेर

- ऊंट की खाल पर सोने से चित्रांकन करना
- कलाकार → उस्ताद कहलाता है
- प्रमुख उस्ताद → हिसामुद्दीन उस्ता (पद्मश्री)
- स्वर्ण काल → महाराजा अनूप सिंह का काल

वर्तमान कलाकार
↓
हनीफ खा उस्ता
ज्योति स्वरूप शर्मा

15 अगस्त 1975 → कैमल मिल्क हाइड सेन्टर की स्थापना → जोहडबीड BKNR
- निर्देशक → हिसामुद्दीन उस्ता
- प्रथम प्रशिक्षण लेने वाला → मोहम्मद असगर उस्ता

इलाही बख्श → महाराजा गंगा सिंह का चित्र बनाया → जूनागढ़ संग्रहालय

फड़ → पौराणिक देवी देवताओं के कपड़े पर चित्र बनाकर व्याख्यान करना
↳ सर्वाधिक → शाहपुरा
↳ रंग → लाल | हरा ✓
↳ प्रमुख → जोशी परिवार अजमेर

करी-फटी फड़ को पुष्कर झील में विसर्जित किया जाता है।

प्रमुख फड़ :→ देवनारायण जी की फड़ → सर्वाधिक लम्बी | छोटी
↳ वाद्ययंत्र → गुर्जर जाति → जन्तर

पाबूजी की फड़ → लोकप्रिय फड़
↳ वाद्ययंत्र → रावण हत्था → (थोरी | रायका | भोपा).

रामदल्ला | कृष्णादल्ला → वाचन दिन में

↳ बीना वाद्य यन्त्र के हाड़ौती आंचल में

भैंसासुर की फड़ → वाचन और वाद्य यंत्र नहीं होता

→ कल्याणमल जोशी ने कोरोना पर फड़ बनाई

→ प्रदीप मुखर्जी → रामचरित मानस - 104 लघु चित्रण

सैनानी फड़ → श्रीमल जोशी

महिला चितेरी → पार्वती जोशी | गीतली देवी

## ब्ल्यू पॉटरी कला : जयपुर (most)

- इस कला को सर्वप्रथम पार्शीया ईरान से लाहौर तक अकबर लाया
- इस कला को जयपुर मिर्जा राजा मान सिंह लाये।
- इस कला मे 25 रंगो का प्रयोग प्रमुख रंग → नीला हरा

ब्ल्यू पॉटरी : सोडीयम कार्बोनेट, क्वार्टज, मुल्तानी मिट्टी, हरा कांच, गोंद → मिश्रण

- → प्रसिद्ध कलाकार → कृपाल सिंह शेखावत
- वर्तमान कलाकार → खेमकरण, सत्यनारायण, गोपाल
- → स्वर्ण काल → सवाई राम सिंह द्वितीय का काल
  - → चुड़ामण | कालूराम
- → वर्तमान मे इस कला का काम खुर्जा गांव बुलन्दशहर U.P. मे मशीनो द्वारा किया जाता है।

→ कागजी पॉटरी → अलवर
→ ब्लैक पॉटरी → कोटा
→ लाल पॉटरी → जैसलमेर